



# AU TALK

## VOLUME 23

### FEBRUARY 2024



WHAT'S UP ON AU CAMPUS



## Editorial Board

### Patron

**Prof. Sangita Srivastava** Honourable Vice Chancellor, University of Allahabad

### Chief Editor

**Dr Chandranshu Sinha** Associate Professor, Department of Psychology, University of Allahabad;  
[chandranshu.sinha@allduniv.ac.in](mailto:chandranshu.sinha@allduniv.ac.in); Mob: 9650670222

### Board of Editors

**Dr Nakul Kundra** Associate Professor, Department of English and Modern European Languages, University of Allahabad  
[drnakulkundra@allduniv.ac.in](mailto:drnakulkundra@allduniv.ac.in)

**Dr Jaswinder Singh** Assistant Professor, Department of English and Modern European Languages, University of Allahabad  
[dr.jaswindersingh@allduniv.ac.in](mailto:dr.jaswindersingh@allduniv.ac.in)

**Dr Charu Vaid** Assistant Professor, Department of English and Modern European Languages, University of Allahabad  
[drcharuvaid@allduniv.ac.in](mailto:drcharuvaid@allduniv.ac.in)

**Dr Shibban Ur Rahman** Assistant Professor, Department of English and Modern European Languages, University of Allahabad  
[drshibanur@allduniv.ac.in](mailto:drshibanur@allduniv.ac.in)

**Dr Sandeep K. Meghwal** Assistant Professor, Department of Visual Arts, University of Allahabad;  
[skmeghwal@allduniv.ac.in](mailto:skmeghwal@allduniv.ac.in)

**Mr. Vishal Vijay** Assistant Professor, Centre for Theaters and Films, University of Allahabad; [vishalvijay@allduniv.ac.in](mailto:vishalvijay@allduniv.ac.in)

**Ms. Jigyasa Kumar** Curator, Vizianagram Hall and Museum, University of Allahabad;  
[vizianagramcurator.au@gmail.com](mailto:vizianagramcurator.au@gmail.com)

## Contents

	<u>Page No.</u>
Hockey Match at UoA	4
University of Allahabad Alumni Association	4
सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं कार्टूनिस्ट स्व. शिक्षार्थी स्मृति आयोजन	5
गांधी विचार एवं शांति अध्ययन संस्थान	6-7
शैक्षणिक और अन्योन्य भ्रमण के उद्देश्य से इलाहाबाद विश्वविद्यालय का दौरा	8
National Science Day 2024	9-10
Academic Audits of the Departments and Centers, UoA	11
शिक्षाशास्त्र विभाग	12
Department of Mathematics	13
राम की आध्यत्मिक अनुभूति; चित्रों में प्रतिबिम्बित	14
Centre of Behavioral and Cognitive Sciences	15
हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग	16-17
AWARDS/HONOURS/LECTURES	18
When Romantic Love Culminates in Marriage By Prof. S.I. Rizvi	19
Book & Movie of the Edition	20

## इलाहाबाद विश्वविद्यालय में आयोजित हॉकी मैच

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के नए एस्ट्रो टर्फ में दुधिया रोशनी में ए जी ऑफिस एवं इलाहाबाद के बीच फ्रेंडली मैच हुआ। मैच का उद्घाटन कुलपति प्रो संगीता श्रीवास्तव ने किया।



इस अवसर पर अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी जहीरुद्दीन, बास्केटबॉल खिलाड़ी आर एस बेदी, गोरखनाथ, मनोज घोष, और 80वर्षीय सीनियर खिलाड़ी मेहताब जी, मोहम्मद शाहिद कमाल आदि उपस्थित रहे।



मैच देखने बड़ी संख्या में शिक्षक एवं छात्र पहुंचे। विश्वविद्यालय की हॉकी कोच प्रसिद्ध महिला खिलाड़ी पुष्पा श्रीवास्तव जी के सहयोग से स्पोर्ट्स बोर्ड द्वारा बोर्ड के डायरेक्टर प्रो हर्ष कुमार एवं कुलसचिव प्रो एन के शुक्ला द्वारा आयोजित करवाया गया। मैच जिला इलाहाबाद की टीम ने 5-4 के स्कोर से जीता। मैच में इलियान ने इलाहाबाद की तरफ से हैट्रिक गोल मारे।

## University of Allahabad Alumni Association

Under the able guidance and leadership of the Honourable Vice Chancellor ma'am, Prof. Sangita Srivastava, the University of Allahabad Alumni Association has proudly kick-started the preparation for the first Alumni Meet, scheduled for 27<sup>th</sup> -28<sup>th</sup> April 2024, for the batches passed out up to the year 1996. Registration for the Association membership as well as the Alumni meet has already started, and the details about the same are available on the University website. The Honourable Vice Chancellor ma'am has recently convened and chaired a meeting with the University teachers to chalk out a blueprint for the meet.

The 2-day event promises to be an exciting affair buzzed with various literary events, exhibitions, visits to the Departments and Hostels, cultural evenings and dinners.

With the official Alumni Association of the University now in place and working, the fake associations duping the alumni in the name of the University stand discredited. The alumni can now directly associate with and actively contribute to their Alma Mater, i.e. the University of Allahabad.





## सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं कार्टूनिस्ट स्व. शिक्षार्थी स्मृति आयोजन

“ कार्टूनिस्ट की सृजनशीलता अद्भुत होती है। वह एकांत के क्षणों में आपका मनोरंजन करती है तो देश दुनिया के बारे में चल रही घटनाओं पर व्यंग्य के जरिए प्रकाश भी डालती है। मैं आज भी एकांत में टॉम एंड जेरी के कार्टून देखती हूँ और कार्टून ने तो बच्चों को कितना सिखाया है। पोपेई नाम के कार्टून ने बच्चों को पालक खाना सीखा दिया। ” ये बातें इलाहाबाद विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. संगीता श्रीवास्तव ने दृश्य कला विभाग में स्व. शिक्षार्थी स्मृति कार्टून चित्र की प्रदर्शनी में कहीं।



दृश्य कला विभाग एवं केंद्रीय सांस्कृतिक समिति के संयुक्त तत्वावधान में 17 फरवरी 2024 को साहित्यकार, कार्टूनिस्ट स्व. शिक्षार्थी जी की स्मृति में कार्यशाला, कार्टून चित्र प्रदर्शनी, पुस्तक विमोचन व सम्मान समारोह का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता कुलपति प्रो. संगीता श्रीवास्तव ने किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रसिद्ध कार्टूनिस्ट पत्रकार, पर्यावरणविद, नाटककार आबिद सुरती थे जिनके बनाए गए कार्टून और चरित्र भी प्रदर्शनी में शामिल थे। यह कार्टून दृश्यकला विभाग में आयोजित कार्यशाला के दौरान निर्मित हुआ था।



आबिद सुरती जी ने कार्यक्रम में बोलते हुए कहा कि मैं दृश्य कला विभाग की यह प्रदर्शनी देख कर अभिभूत हुआ मैंने बहुत से प्रदर्शनीयों का उद्घाटन देखा है लेकिन यह अभूतपूर्व है। अध्यक्षीय भाषण में कुलपति प्रो.संगीता श्रीवास्तव ने व्यंग्य चित्रों की संदेश देने की ताकत के बारे में बात की और विद्यार्थियों को कहा कि इस सृजनशीलता से वह कुछ सीखें। उन्होंने धर्मयुग के दिनों को याद करते हुए कहा कि वह ढबू जी के कारण पत्रिका का पिछला पन्ना पहले पढ़ती थीं।

कार्यक्रम में स्व. शिक्षार्थी जी की कार्टून पुस्तिका का विमोचन भी हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए दृश्य कला विभाग और सांस्कृतिक समिति के अध्यक्ष प्रो. अजय जेटली ने कहा कि आज की प्रदर्शनी और कार्यक्रम देख कर उन्हें संतोष हो रहा है कि वह विभाग को जिस तरह सजाने का सपना देख रहे थे वह साकार होता लगा रहा है। कार्यक्रम का संचालन अमितेश कुमार ने किया, स्वागत वक्तव्य मोना अग्निहोत्री ने दिया और धन्यवाद ज्ञापन किया विशाल जैन ने। केंद्रीय सांस्कृतिक समिति के सदस्यों अमित सिंह, विशाल विजय, अमृता, के साथ दृश्य कला विभाग के अध्यापक सचिन, शौमिक के साथ शोधार्थी और छात्र भी अच्छी संख्या में मौजूद थे। 18 फरवरी 2024 को दूसरे दिन 'पर्यावरण, साहित्य, कार्टून और रंग कर्म की दुनिया' विषय पर श्री आबिद सुरती जी का व्याख्यान होगा। वरिष्ठ साहित्यकार एवं समालोचक प्रो.राजेंद्र कुमार कार्यक्रम की अध्यक्षता करेंगे। कार्टून प्रदर्शनी 17, 18 और 19 को विभाग में देखी जा सकती है।

कार्यक्रम में कुलसचिव प्रो. एन.के. शुक्ला, प्रो. संजय सक्सेना, प्रो. जया कपूर चड्ढा, प्रो. बेचन शर्मा, प्रो. के. एन. उत्तम, प्रो. अनुपम पांडेय, प्रो. शबनम हमीद, प्रो. अनिता गोपेश के साथ शिक्षार्थी परिवार से भावना शिक्षार्थी, अनुभव शिक्षार्थी आदि मौजूद रहे।

## गांधी विचार एवं शांति अध्ययन संस्थान

“किसी व्यक्ति की तुलना अन्य व्यक्ति से करना उचित नहीं है, प्रत्येक व्यक्ति अलग तरीके से खास है। गांधी जी से हमेशा मेरा मन प्रेरित रहा। स्कूली शिक्षा के दौरान कोई गांधी भवन जैसी जगह नहीं थी जहां हम गांधी जी से रूबरू होते।” ये बातें इलाहाबाद विश्वविद्यालय की माननीय कुलपति महोदया ने गांधी विचार एवं शांति अध्ययन संस्थान में कहीं।

गांधी भवन के स्थापना दिवस पर अयोजित समारोह में गांधी विचार एवं शांति अध्ययन संस्थान और राजभाषा अनुभाग के संयुक्त तत्वावधान राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के सहयोग से बांग्ला और अंग्रेजी से हिंदी में अनूदित किताबों का विमोचन हुआ। कुलपति महोदया ने कहा कि यह सुखद अनुभव है कि विश्वविद्यालय के सहयोग से अनूदित किताबें बच्चों के लिए तो प्रेणादायक हैं ही ये हमारे लिए भी उतनी ही उपयोगी हैं। हमारे अपने कैम्पस में तैयार इन किताबों में हमारे शिक्षक, कार्मिक और विद्यार्थियों की मेहनत, उनकी लोकभाषा, आधुनिकता की महक मुझे महसूस होती है। सीखने के लिए हमें किताबें खरीद कर पढ़नी चाहिए। किताबें हमारी सच्ची मित्र होती हैं और जब किताबें हमारे युवा जीवन की कहानियों से संबंधित हों तब वो हमें समय की सैर कराती हैं।



कार्यक्रम का आरम्भ राजकीय अभिलेखागार द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी के उद्घाटन से हुआ। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी की यह दुर्लभ प्रदर्शनी आज के युवाओं को जरूर देखनी चाहिए, समझनी चाहिए।

कार्यक्रम की अध्यक्ष वरिष्ठ गांधीवादी डॉ संतोष गोइंदी जी ने माननीय कुलपति महोदया को पुस्तक भेंट करते हुए इलाहाबाद विश्वविद्यालय की पहली महिला कुलपति होने की बधाई दी। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि इस तरह के कार्यक्रम गांधीवादी विचारों को लोगों तक पहुंचने में बहुत बड़ी भूमिका निभाते हैं। हर व्यक्ति का अंतःकरण शुद्ध होता है। महात्मा गांधी को समर्पित इस कार्यक्रम में इतने युवा चेहरों को देखकर बहुत खुशी हो रही है। मुझे यह जानकर खुशी है कि युवाओं में महात्मा गांधी की समझ पैदा करने का काम नाटक, कविता, पोस्टर निर्माण, किताब पर बात, फिल्म प्रदर्शन आदि पर केंद्रित प्रतियोगिताओं के माध्यम संस्थान कर रहा है।

इससे पूर्व संस्थान के निदेशक प्रो. संतोष भदौरिया जी ने माननीय कुलपति महोदया का संस्थान की ओर से अभिनंदन किया और संस्थान के गौरवशाली इतिहास का जिक्र करते हुए बताया कि संस्थान का आज स्थापना दिवस है। 06 फरवरी 1961 में इस संस्थान की नींव महाराष्ट्र के तत्कालीन राज्यपाल श्री प्रकाश ने रखी। उन्होंने बताया कि संस्थान में देश के अनेक गांधीवादी विचारको, साहित्यकारों ने दौरा किया। उन्होंने पिछले दो साल की सांस्कृतिक और अकादमिक गतिविधियों की संक्षिप्त जानकारी दी।





कार्यक्रम की शुरुआत में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के संगीत विभाग के डॉ विशाल जैन के नेतृत्व में विद्यार्थियों ने संगीतमय प्रस्तुति दी। महात्मा गांधी से संबंधित गीतों की प्रस्तुति के बाद औपचारिक रूप से कार्यक्रम शुरू हुआ।



धन्यवाद जापन इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलसचिव और राजभाषा समिति के अध्यक्ष प्रो नरेंद्र कुमार शुक्ला ने किया। संचालन संस्थान की सहायक आचार्य डॉक्टर तोशी आनंद ने किया। कार्यक्रम की समाप्ति महात्मा गांधी के भजन की प्रस्तुति और राष्ट्रगान के साथ हुई।

## शैक्षणिक और अन्योन्य भ्रमण के उद्देश्य से इलाहाबाद विश्वविद्यालय का दौरा

प्रयागराज स्थित महर्षि पतंजलि विद्या मंदिर स्कूल के विद्यार्थियों का एक प्रतिनिधिमंडल ने शैक्षणिक और अन्योन्य भ्रमण के उद्देश्य से दिनांक 29.01.2024 को इलाहाबाद विश्वविद्यालय का दौरा किया। छात्रों के समूह का स्वागत विश्वविद्यालय द्वारा शुरू की गई एक पहल के अंतर्गत किया गया, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों के बीच गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा के प्रति उत्साहवर्धन और अकादमिक उत्कृष्टता के केंद्र के रूप में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से जुड़ी गरिमा को पुर्नजागृत करना है। विश्वविद्यालय की ओर से अंग्रेजी और आधुनिक यूरोपीय भाषा विभाग के सहायक आचार्य डॉ. मृत्युंजय राव परमार द्वारा किया गया। इस समूह में ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ने वाले छात्र और छात्राएं तथा उनके स्कूल के शिक्षक भी थे।

छात्रों को विज्ञान और कला दोनों संकायों का गाइडेड टूर प्रदान किया गया। छात्रों ने परिसर के पथ के वास्ते विजयनगरम् हॉल, जन्तु विज्ञान विभाग में संग्रहालय, परिसर की खेल सुविधाएं, खाद्य प्रौद्योगिकी केंद्र की प्रयोगशाला, जे.के. संस्थान और इसकी प्रयोगशालाएं, प्राचीन इतिहास विभाग का संग्रहालय, निकटवर्ती निराला आर्ट गैलरी शामिल रहे। इसी के साथ ही साथ दृश्य और ललित कला विभाग तथा ऐतिहासिक सीनेट हाउस का भी भ्रमण किया गया।



यह उल्लेखनीय है कि उपर्युक्त विभागों के संकाय सदस्यों और कर्मचारियों ने छात्रों के साथ बातचीत की और उनके सामने अपने संबंधित शैक्षणिक अनुशासन से जुड़ी विभिन्न संभावनाओं को उजागर किया। विजयनगरम् हॉल के संग्रहाध्यक्ष सुश्री जिज्ञासा कुमार, जन्तु विज्ञान विभाग से डॉ. प्रदीप चंद्र सती और डॉ. जगदीश सैनी, खाद्य प्रौद्योगिकी केंद्र से डॉ. एस.के. चौहान, प्राचीन इतिहास विभाग के डॉ. अतुल नारायण सिंह, जे.के. संस्थान से डॉ. ऋचा मिश्रा, स्पोर्ट्स बोर्ड से राजवीर सिंह, दृश्य कला विभाग से डॉ. सचिन सैनी ने इस दौरे में छात्रों का मार्गदर्शन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।



### National Science Day 2024

The National Science Day was organized by the Faculty of Science on 28<sup>th</sup> February, 2024 in the D.D.Pant Auditorium of Department of Botany. The theme of the day was “The Indigenous Technologies for Viksit Bharat”.

The event was inaugurated by Prof. Sangita Srivastava, the Hon'ble Vice-Chancellor, University of Allahabad. The event started with lighting of a Lamp followed by garlanding the portrait of Goddess Saraswati and offering a floral tribute to the Nobel Laureate Prof. C.V. Raman. The students from Department of Music presented Saraswati Vandana and Kulgeet of the University on the occasion. The dignitaries were felicitated by a bouquet of flowers and a memento. The participants included the Heads of eleven Departments, Coordinators of twelve Centres, Directors of IIDS and IPS, Faculty members, Research scholars and post graduate students from different Departments and Centres. The event comprised of the Inaugural session presided over by the Hon'ble Vice-Chancellor, Prof. Sangeeta Srivastava, an Invited talk from Prof. RS Verma, Director, MNNIT-Prayagraj, Young Scientist Award session with open speech by contestants on different aspects of the theme, Oral presentations of original research papers, Poster presentations by research scholars and postgraduate students from both the biological and physical sciences streams. The sessions for the Young Scientist contest, oral and poster presentations were adjudicated by the experts in the Biological and Physical sciences.

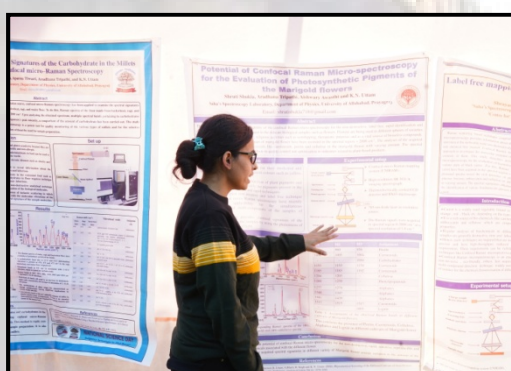
Dr.Ujla Minhas and Dr. Aroop Acharjee from the Departments of Biochemistry and Zoology, respectively, conducted the session in a very systematic manner. Prof. Abhay Kumar Pandey, Convenor of the event welcomed Prof. Sangeeta Srivastava, the Hon'ble Vice-Chancellor-University of Allahabad, Prof. RS Verma, Director-MNNIT, Prayagraj, invited guests and the participants.



Prof. Bechan Sharma, Dean, Faculty of Science and Chairman of the Symposia, presented the glorious history of foundation of Faculty of Science and a progress report. He briefly described the discovery of Prof. CV Raman and laid stress on how the indigenous technologies can lead the country to be a developed Nation by 2047, after 100 years of the independence. Prof. S.I. Rizvi, Dean, Research and Development elaborated the innovations and the research projects awarded to many Faculty members in science. Prof. RS Verma, Director, MNNIT Prayagraj,

expressed about the recent scientific discoveries and technological advancements in India and their applications in every walk of life.

The Hon'ble Vice-Chancellor, the Patron of the Symposia & National Science Day, illustrated the journey of Indian Science from ancient times to date by citing various examples, and motivated the faculty members and students to continue striving for innovations and excellence in research with quality publications in journals of repute to take up the University at the international arena. She made the audience apprised of what India expects from its academicians and researchers today to better serve the society through scientific inventions. She deeply appreciated the overall citations and publication record achieved by Faculty of Science of University of Allahabad. She thanked everyone for organizing this great event to commemorate the ground breaking discovery of Prof. CV Raman, a Nobel Laureate in Physics and to provide opportunities for youngsters to develop their research endeavour to be winners.



The inaugural Session ended by presentation of vote of thanks by the convener of the programme, Prof. Abhay K. Pandey, Department of Biochemistry.

The Technical Sessions started with an informative talk on the topic, 'How to apply knowledge to go forward for Viksit Bharat' presented by the keynote speaker, Prof. R.S. Verma, Director, MNNIT, Prayagraj, who elaborated about the innovations on sustainable technologies and their utilization for Viksit Bharat by 2047. Simultaneously, a Rangoli competition was organized in different Departments of Science Faculty on 28<sup>th</sup> February, 2024 by the Research Scholars and Post-graduate students projecting the spirit of the theme. The Rangoli presentations were evaluated by Prof. Pratima from Department of Physics, Dr. Ujla Minhas from department of Biochemistry and Dr. Ritu Mishra, Department of Botany, University of Allahabad. The Valedictory session concluded the entire activities of one day long event, faculty members and the participants expressed their view points, and the winners in Young Scientist contest, Oral and Poster presentations in Biological Sciences were awarded with the Certificate. The collection of data from experts, preparation of results and the certificate award programme was meticulously organised by Dr. Jalaj Kumar Goud and his team members in association with the Office Staff members. The Symposia and National Science Day 2024 celebration ended with a vote of thanks by Prof. Abhay Kumar Pandey followed by recital of the National Anthem.



### Academic Audits of the Departments and Centers, UoA

In a proactive move towards ensuring academic excellence and continuous improvement, the University of Allahabad started the academic audit of the departments and centres of the university from 5<sup>th</sup> February 2024 onwards. In this series, on the 8<sup>th</sup> February, the academic audit team of the university, under the leadership of Professor Rama Shanker Verma (Director, Motilal Nehru National Institute of Technology, Prayagraj), did the academic audit of the Chemistry Department.

The Chemistry Department at the University of Allahabad (UoA) reached a significant milestone with its inaugural external audit conducted by the esteemed Director of MNNIT Allahabad on 8<sup>th</sup> February 2024. The audit team meticulously examined various aspects of the academic operations, research endeavors, and overall performance.

The team found that the highly-qualified and dedicated faculty members, who exhibit a commendable commitment to delivering high-quality education and fostering a nurturing learning environment for students, are the biggest strength of the department. Additionally, the team acknowledged the significant contributions of the department to advancing knowledge in the field of Chemistry through publications and collaborative research projects; it lauded the creative and constructive endeavours of the department.



Furthermore, the team highlighted the importance of providing seed money to early-career researchers and fostering a culture of continuous professional development among the faculty members. Prof. Sangita Srivastava, Hon'ble VC of the University said, "Ensuring academic excellence is paramount to our mission. As we embark on the academic audit of the Department of Chemistry, we reaffirm our commitment to fostering a culture of continuous improvement. This audit presents an invaluable opportunity for self-reflection and growth, and I urge all stakeholders to actively engage in this process. Together, let us strive to uphold the highest standards of education and research, positioning our departments and centres as beacons of excellence within the academic community."

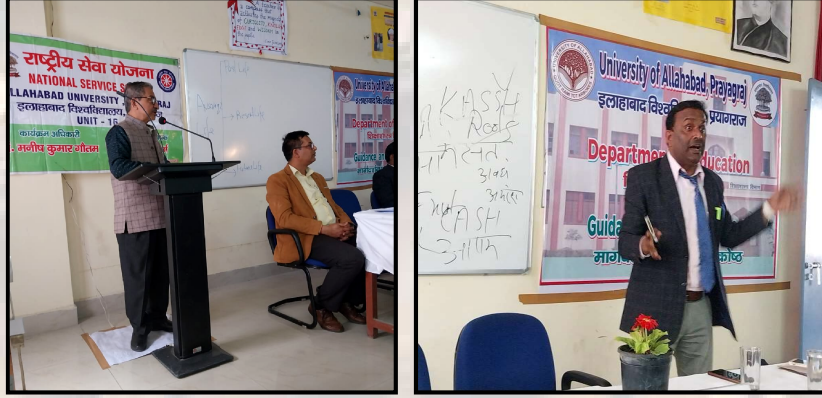
The Director of MNNIT expressed appreciation for the comprehensive evaluation. Acknowledging the identified opportunities for improvement, the Director reaffirmed the institute's commitment to supporting the Department of Chemistry in its pursuit of excellence. He outlined a series of strategic initiatives that aim to foster greater collaboration, enhance research infrastructure, and nurture talent within the department. Additionally, he emphasized the institute's dedication to providing ample resources and support to ensure that the faculty members and students should thrive in their academic and research endeavors.

The audit not only ensures adherence to established standards but also highlights the department's continuous efforts towards improvement and innovation in the field of chemistry education and research. Prof. Manoj Kumar, Co-coordinators of NAAC was also present during the audit.

## शिक्षाशास्त्र विभाग

माननीय कुलपति प्रो. संगीता श्रीवास्तव के प्रेरणास्वरूप शिक्षाशास्त्र विभाग के मार्गदर्शन एवं परामर्श प्रकोष्ठ, एवं विश्वविद्यालय सेवा योजना सूचना एवं मंत्रणा केंद्र, के संयुक्त तत्वाधान में शिक्षाशास्त्र के स्नातक एवं परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों के लिए "विद्यार्थी अपने जीवन में सफलता कैसे पाएं और जीवन को कैसे बेहतर बनाएं" विषयक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसकी रूपरेखा मार्गदर्शन एवं परामर्श सेल के समन्वक डॉ पतंजलि मिश्रा द्वारा तैयार की गई थी।

शिक्षा विभाग के अध्यक्ष प्रो धनञ्जय यादव ने अतिथियों का स्वागत किया और विद्यार्थियों को कहा कि किसी भी तरह की सफलता प्राप्त करने के लिए परिश्रम का कोई विकल्प नहीं होता है। लक्ष्य केन्द्रित करके सही दिशा में कठोर परिश्रम करके सफलता प्राप्त किया जा सकता है। जितना बड़ा संघर्ष होगा, जीत उतनी ही शानदार होगी।



कार्यशाला के मुख्यवक्ता डॉक्टर सुशीव सिंह ने बताया कि जीवन में सफलता के तीन मंत्र हैं- सही समय पर सही सोच के साथ सही दिशा में कदम आगे बढ़ाने पर सफलता मिलती है। सफलता किसी दूसरे की मेहनत से हासिल नहीं हो सकती है, ईश्वर भी उसी की मदद करते हैं जो अपनी मदद स्वयं करता है।

विश्वविद्यालय सेवा योजना सूचना एवं मंत्रणा केंद्र के श्री अभिषेक श्रीवास्तव ने मन को नियंत्रित करने के उपाय बताएं तथा कहा कि हमें जीवन में कभी हताश नहीं होना चाहिए, निरंतर आगे बढ़ता रहना चाहिए।



मार्गदर्शन एवं परामर्श सेल के सह-समन्वक डॉ देवी प्रसाद सिंह ने कहा कि मनुष्यता की रचना करना शिक्षा का परम उद्देश्य है। शिक्षा से संस्कृति, संस्कृति से संस्कार, संस्कार से उद्धार एवं मनुष्य का पूर्ण विकास होता है। धन्यवाद ज्ञापन डॉक्टर मनीष कुमार गौतम ने किया।



### Department of Mathematics

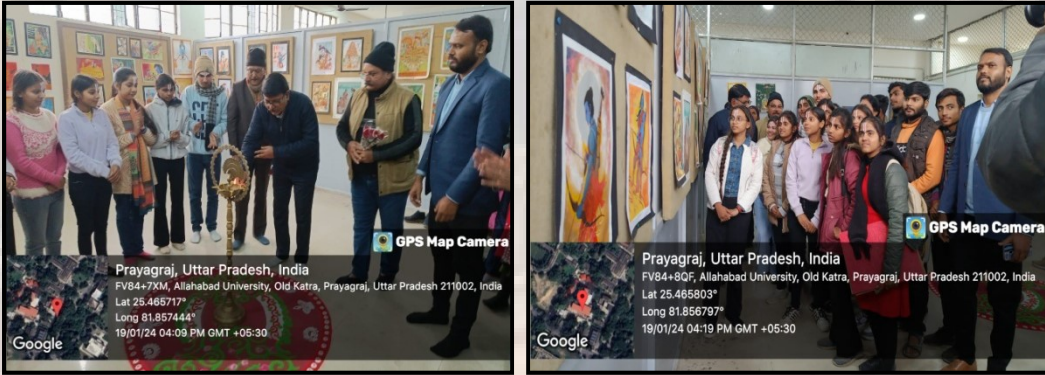
The Department of Mathematics organized an enriching event comprising an online quiz competition and a special invited lecture by Professor Rama Mishra from the Indian Institute of Science Education and Research (IISER), Pune. The event aimed to commemorate the legacy of Sir C.V. Raman and promote scientific awareness and curiosity among students. As a highlight of the event, Professor Rama Mishra, a distinguished Professor from IISER Pune, delivered a special invited lecture on a topic of contemporary significance in the field of mathematics. Professor Mishra's expertise and insights added immense value to the event, enriching the academic experience for all participants. Her lecture provided a unique opportunity for students to gain deeper insights into cutting-edge research and developments in mathematics, inspiring them to explore new avenues of learning and discovery. Following the lecture, there was an interactive session where participants had the opportunity to engage with Professor Mishra, asking questions and seeking clarification on various aspects of the lecture topic. This interaction fostered a dynamic exchange of ideas and perspectives, enhancing the learning experience and encouraging critical thinking among participants. The online quiz competition served as an engaging platform for students to test their mathematical knowledge and problem-solving skills. Post Graduate students of the department took part in the competition, showcasing their passion for mathematics and their commitment to academic excellence. The combined event of an online quiz competition and the special invited lecture by Professor Rama Mishra was a resounding success, reflecting the Department of Mathematics' commitment to promoting scientific awareness and academic excellence. The event provided a platform for students to showcase their talents, interact with Professor Mishra, and deepen their understanding of the subject. It served as a fitting tribute to the spirit of inquiry and innovation embodied by Sir C.V. Raman, inspiring students to embark on their own journeys of discovery and intellectual exploration.



### राम की आध्यत्मिक अनुभूति: चित्रों में प्रतिबिम्बित

दृश्य कला विभाग एवं केंद्रीय सांस्कृतिक समिति के संयुक्त तत्वाधान में 'कला में राम' विषय पर कार्यशाला, फेस पेंटिंग, रंगोली, कला प्रदर्शनी व लघु-फिल्म का प्रदर्शन किया गया। दृश्य कला विभाग के विद्यार्थियों ने रंगोली व पेंटिंग में राम के लोक रक्षक, लोक समंयक, लोक सेवक, राष्ट्र नायक रूप को रंगों के द्वारा जब कैनवास पर उतारा तो पूरा वातावरण राममय हो गया।

युवा कलाकारों की कृतियों में असीम आध्यात्मिक संभावनाएं छुपी हुई हैं जिसे इस प्रदर्शनी में देखा जा सकता है तमाम आकृतियों और उसमें नीहित बिम्ब यह प्रदर्शित करते हैं कि छात्रों ने ना केवल अपनी कला में रुचि प्रदर्शित की है बल्कि वह मर्यादा पुर्णतम राम व उनके आदर्शों को स्वयं के जीवन में उतारते प्रतीत हो रहे हैं, प्रभु श्री राम की आध्यत्मिक अनुभूति को भी अपने चित्रों में कुशलता से व्यक्त कर रहे हैं, प्रदर्शनी के शुभारम्भ के अवसर पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुल सचिव प्रो. एन.के. शुक्ल ने कहा कि इस तरह के आयोजन न केवल युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत हैं बल्कि सांस्कृतिक विरासत को भी ताकत देते हैं तथा जब सम्पूर्ण भारतवर्ष में प्रभु श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा का उत्सव मनाया जा रहा है, तब दृश्य कला विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय के परिवार ने भी इस प्रदर्शनी के माध्यम से 'कला में राम' को बहुत ही सुंदर तथा कलात्मक रूप में दर्शाया है



दृश्य कला विभाग तथा कैमलीन लि. कम्पनी के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 18.01.2024 तथा 19.01.2024 दो दिवसीय सेमिनार तथा चित्रकला कार्यशाला का आयोजन भी किया गया, जिसमें कैमलीन लि. कम्पनी के रीजनल प्रमोशनल मैनेजर श्री कमल सेठ द्वारा रंगों के वैज्ञानिक पक्ष पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। सम्पूर्ण आयोजन में लगभग 120 छात्रों तथा विभाग के शिक्षकों की महती भूमिका रही।

विश्वविद्यालय की सांस्कृतिक समिति के अध्यक्ष प्रो.अजय कुमार जैतली तथा सदस्यगण डॉ. अमृता, डॉ. विशाल जैन, डॉ. मोना अग्निहोत्री, श्री राजमणि मोर्या, डॉ. अमितेश कुमार, डॉ. विशाल विजय, डॉ. अमित सिंह एवं दृश्य कला विभाग के प्राध्यापक डॉ. संदीप कुमार मेघवाल, श्री सौमिक नंदी, डॉ. सचिन सैनी, डॉ. अदिति पटेल तथा अन्य विभागों से आए सैकड़ों विद्यार्थी एवं अन्य प्रोफेसर भी इस कला प्रदर्शनी एवं कार्यशाला के साक्षी बने।



### Centre of Behavioral and Cognitive Sciences

Allahabad Regional Brain Bee, a neuroscience contest for 11<sup>th</sup> grade students, was hosted by the Centre of Behavioral and Cognitive Sciences, University of Allahabad, on 23<sup>rd</sup> February, 2024.

Excitement crackled in the air as budding neuroscientists from local schools came together for the Brain Bee competition! These passionate young minds, fueled by curiosity and a love for the brain, battled it out in a thrilling test of knowledge. Brain Bee contest is an attempt to motivate students to learn about the brain, to capture their imaginations, and inspire them to pursue careers in biomedical brain research. It is a non-profit neuroscience competition for high school students that provides an opportunity to participate in an international conference on neuroscience.

24 students from 8 prestigious schools from Allahabad participated in the competition. Each participant was accompanied by a guardian. The competition consisted of a written test followed by the oral rounds consisting of three phases, with increasing levels of difficulty. Tripti Verma, a PhD scholar from CBCS, introduced the session and spoke about the exciting work being done at CBCS in cognitive sciences and mentioned about the rapid emergence of the brain sciences as a major area of research. She emphasized the role of social emotional learning and pro social skill development and how the research aids in the realm of education.



The event was organized by the faculty and students of CBCS. The judges were Dr. Chhitij Srivastav, Child Psychiatrist at Allahabad Child Development Centre and a former Faculty at the Medical College Allahabad and Dr. Arup Acharjee, faculty, Department of Zoology, University of Allahabad.

It was an exciting event to witness with enthusiastic participants from different schools who left no stone unturned to show their zeal towards neuroscience. Beyond the individual triumphs, Brain Bee fostered a spirit of camaraderie and intellectual exchange. Students from different schools connected over their shared passion, creating a vibrant learning community. The event ignited a spark in many, inspiring them to delve deeper into the fascinating world of neuroscience and potentially pursue future careers in this exciting field.

Sharddha Gupta from BBS International School, Allahabad, bagged the first prize at the 2024 Allahabad Regional Brain Bee with Pratyush Chowdhury, Tagore Public School, Allahabad and Utkarsh Dwivedi, St. Joseph's College, Allahabad, being the first and second runners up, respectively.

## हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग

हिंदी विभाग इस वर्ष अपना शताब्दी वर्ष मना रहा है, इसी क्रम में इसी वर्ष जगदीश गुप्त जी का भी जन्मशती वर्ष है। वे हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष रह चुके थे। उनकी स्मृति में इस कार्यक्रम के ज़रिये उन्हें काव्य पाठ एवं अतिथियों के विशिष्ट व्याख्यान के माध्यम से याद किया गया। इस दौरान मंच पर प्रो. स्मिता अग्रवाल, प्रो.अजय जैतली, प्रो.प्रणय कृष्ण विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग एवं लोकप्रिय आदिवासी कवि अनुज लुगुन जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए।

सभी मुख्य अतिथियों का स्वागत लक्ष्मण प्रसाद गुप्त, बसंत त्रिपाठी, और वीरेन्द्र कुमार मीणा ने पौधा देकर किया। कविता पाठ एवं गज़ल की प्रस्तुति में आदर्श कुमार को प्रथम पुरस्कार, प्रतीक ओझा को द्वितीय पुरस्कार व आदित्य पाण्डेय को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। हर्षिता त्रिपाठी, हर्षित उपाध्याय, स्वतंत्र गुसा, प्रियम दुबे, सविता एकांशी, अग्निवेन्द्र सिंह को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ। इन सभी प्रतिभागियों ने अपनी रचनाओं का पाठ किया, जिसका संचालन असिस्टेंट प्रोफेसर सुरभि त्रिपाठी जी ने किया।

व्याख्यान सत्र के दौरान अतिथिगण द्वारा अपने वक्तव्य के माध्यम से कविता की समीक्षा की गई। इस दौरान प्रो अजय जैतली ने जगदीश गुप्त से जुड़ी यादें साझा की। उन्होंने कवि जगदीश गुप्त की पंक्ति "आंख भर देखा कहां, आंख भर आयी" का जिक्र किया। उनकी कला की मर्मज्ञता का संदर्भ दिया और बताया कि वे दृश्यकला विभाग में भी कक्षाएँ लेते थे।



प्रो स्मिता अग्रवाल ने अपने लंबे अनुभव के माध्यम से कविता को समझाने का प्रयास किया। उन्होंने वैश्विक कविताओं का उदाहरण देते हुए बताया कि कवि को क्या करना चाहिए। उन्होंने चिंता जताई कि युवा कवि वैश्विक समस्याओं पर कम बात कर रहे हैं, जबकि उन्हें इस ओर ध्यान देना चाहिए।

कवि अनुज लुगुन ने प्रतिभागियों से पूछे गये दो सवालों से बातचीत शुरू की, पहला यह कि आप कविता क्यों लिखते हैं? और कविता क्यों जरूरी है? इस पर बात करते हुए उन्होंने कविता के महत्त्व और उसकी सांस्कृतिक उपादेयता पर बात की। उन्होंने कहा कि कविता मनुष्य की बात करती है, और आज मनुष्य की बात करना, सबसे जोखिम की बात है। इसलिए कविकर्म आसान नहीं है, उसके लिए खुदको खपाना पड़ता है। इस दौरान लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता मंच संचालन कर रहे थे।

अंत में प्रतिभागियों को अतिथियों द्वारा सम्मानित किया गया। पुरस्कार स्वरूप राजकमल प्रकाशन की ओर से पुस्तकें भेंट की गईं। इस दौरान मंच संचालन एसोसिएट प्रोफेसर बसंत त्रिपाठी ने किया।

कार्यक्रम का समापन एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रो प्रणय कृष्ण, विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग ने किया।



## हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग

13 फरवरी 2024 को हिंदी विभाग के न्यू हॉल में 'आदिवासी साहित्य: परख एवं प्रवृत्ति' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता दक्षिण बिहार विश्वविद्यालय, गया में सहायक आचार्य पद पर कार्यरत व प्रतिष्ठित कवि एवं आलोचक डॉ. अनुज लुगुन थे। मुख्य वक्ता अनुज लुगुन ने बहुत ही सारगर्भित रूप से आदिवासी साहित्य परंपरा का मूल्यांकन किया, जहाँ उन्होंने समाज की ऐतिहासिक समीक्षवादी दृष्टि की ओर आकर्षित करते हुए हिंदी या मुख्य धारा की भाषाओं के इतर आदिवासी मातृभाषा में रचित साहित्य के अवलोकन पर बल दिया। जो उस पूरे विन्यास को समझने में सहायक सिद्ध होता है।

इसी क्रम की आदिवासी दर्शन की बात करते हुए "प्राकृतिक संसाधनों को पूर्वजों से मिली हुई विरासत से ज्यादा आने वाली पीढ़ियों से उधार के रूप में देखना चाहिए" की संरक्षण वादी अवधारणा भी रखी। आदिवासी गीतों में समय के अनुसार किस प्रकार नई पद्धतियों और बिंबों को प्रवेश मिलता है, इस प्रकार अंत में उन्होंने सामूहिकता की भावना के प्रसार का मंत्र देकर, जसिंता करीकेट्टा की पंक्तियां "वो हमारे सभ्य होने का इंतज़ार कर रहे हैं और हम उनके मनुष्य होने का" का वाचन किया।



अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. बसंत त्रिपाठी ने अनुज लुगुन के उद्बोधन की प्रशंसा करते हुए, उसके कई पक्षों को विस्तारित किया। उन्होंने आदिवासी भाषा विज्ञान के रचयिता हीरालाल शुक्ल और लाला जगदलपुरी के काम की महत्ता बताई ,पुराने मिथकों को तोड़ती और नए मिथकों को गढ़ती आदिवासी साहित्यिक प्रवृत्ति का वर्णन करते हुए लोहासुर और कोयलासुर जैसे मिथकीय पात्रों के बारे में भी बताया।

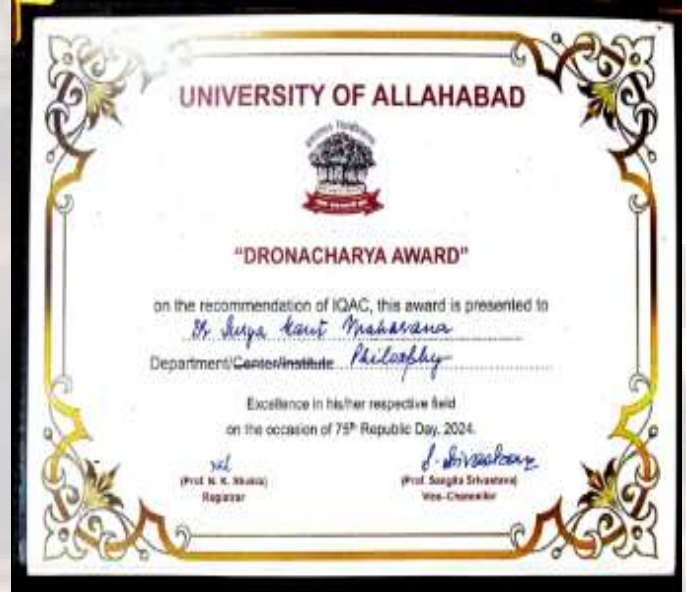
व्याख्यान के उपरांत कार्यक्रम का संचालन कर रहे वीरेंद्र कुमार मीणा ने अनुज लुगुन की कई कविताओं में संवेदना के कई आयामों को उनकी पंक्तियों को उद्धृत करते हुए श्रोताओं के समक्ष रखा। कार्यक्रम में अतिथियों एवं श्रोताओं का स्वागत हिंदी एवं आधुनिक भाषा विभाग ,इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अध्यक्ष प्रो. प्रणय कृष्ण ने किया। उन्होंने आमंत्रित मुख्य वक्ता को शॉल और डॉ. गाजुला राजू ने पौधा भेंट किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. वीरेंद्र कुमार मीणा ने और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. जनार्दन ने किया।

**AWARDS /HONOURS /LECTURES**

**Prof. Bhoomika Kar, Coordinator, Centre of Behavioral and Cognitive Sciences** have been selected as a Fellow of the Association for Psychological Science (APS), 2023 (declared in Feb 2024).

Fellow status is awarded to APS members who have made sustained outstanding contributions to the science of psychology in the areas of research, teaching, service, and/or application. Fellow status is typically awarded for one's scientific contributions, but may also be awarded for exceptional contributions to the field through the development of research opportunities and settings. Researchers who have an outstanding record of mentoring students from diverse backgrounds, working with research participants from diverse backgrounds, and making outstanding contributions to diversity and inclusion within the field of psychological science qualify for consideration. Candidates will be considered after 10 years of postdoctoral contribution.

**Dr. Surya Kant Maharana, Assistant Professor, Department of Philosophy** has been awarded "DRONACHARYA AWARD" for excellence in his respective field.



यह अवार्ड फ़ारूक जुनून फाउंडेशन की ओर से फ़ारूक खान (फ़ारूक जुनून) की स्मृति में प्रति वर्ष 31 जनवरी को दिया जाता है। कला, साहित्य, रंगमंच, चिकित्सा, समाजसेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए यह सम्मान दिया जाता है। डॉ. लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग को यह अवार्ड कविता के क्षेत्र में कार्य करने लिए दिया गया। इनके दो काव्य संकलन - 'जिसे वे बचा देखना चाहते हैं' (2015) और 'तीसरी नदी' (2022) प्रकाशित हैं।





### When Romantic Love Culminates in Marriage

\* S.I. Rizvi

What is the purpose of life? Humans have long debated this philosophical question. While the answer to this question depends heavily on one's inclination towards religious thought, biologically the answer is that the purpose of life is to reproduce. Every living creature on this earth finds a reason to reproduce and this is how life has sustained on this blue planet for the last 3.5 billion years.

In the huge timescale of 3.5 billion years, life has undergone almost infinite changes following Charles Darwin's Natural Selection resulting in the huge diversity of life forms that we now see on earth. It is during this process which the biologists call 'evolution' that all the traits of living organisms have developed.

Of all the fascinating beauty of life, humans have also been blessed with a blissful emotion of romantic love. Indeed, our life would have been bland, resembling animals, if we did not have the emotion of romantic love. Although certain animals show the instinct of love, but it is confined to affection, caring and protection of other individual mostly the progeny. Romantic love is unique to humans as a species.

Again, dwelling on the question about the purpose of life, the emotion of romantic love, which is perhaps the most universal emotion, has a strong association with the act of procreation. Perhaps it was nature's design to provide humans with an emotion which would be so overwhelmingly beautiful that it would ensure continuity of life despite odds.

While evolution was playing its process of Natural Selection, leading to creation of homo sapiens, an interesting thing was happening alongside. Humans started evolving as a species with a higher intelligence, much more than any other animal. However, for intelligence to evolve it became necessary that the size of the brain must also increase. Thus, now we find that of all the animals on this planet, humans have the largest brain size when compared to total body size.

As the size of the brain increased, it created an impediment in childbirth. Thus, as a protective mechanism humans started giving birth to premature babies. Newborns of all animals are not required to be taught to eat, walk or swim. The human newborn child is unique amongst all animals that it requires several years of parental care and protection.

It was in these difficult moments that the emotion of romantic love happened for humans. The bond of love became an important tool to bind two unrelated humans of two sexes. Love created an association between two unrelated individuals to come together and be selfless in providing care and affection. This type of bond which developed between two individuals helped to provide support to the newborn infant which needed care during infancy. By making this emotion of 'romantic love' so attractive, nature through the process of natural selection, ensured that two individuals started living together without any obvious reason. Thousands of years would have passed in the life of Homo sapiens while they formed attractive association within themselves living together in undefined bonds where the only force of attraction was 'romantic love'.

As time passed and humans acquired more intelligence, societal pressure and evolving social norms dictated that the bonds which were formed due to 'romantic love' became formalized. It was this societal pressure which started the institution of marriage. It is thus no surprise that humans link the emotion of 'romantic love' to the process of marriage. Isn't it strange that two people from two different backgrounds would come together and take vows to live together 'till death do us part'.

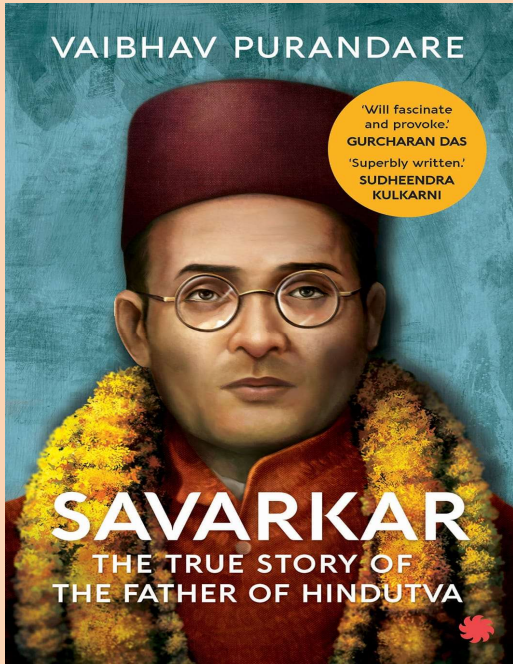
In these difficult times of the twenty-first century, where amongst all measurable quantities, time is the most precious commodity, it is indeed anecdotal that humans with all their ingenuities would devise a mechanism to celebrate an emotion so mundane as 'romantic love'. Whatever be the historical reason, Valentine's day certainly provides a reason for most of us to celebrate the beautiful emotion of 'romantic love'.

**\*Senior Professor and Dean, Research and Development, University of Allahabad**

**BOOK & MOVIE OF THE EDITION**

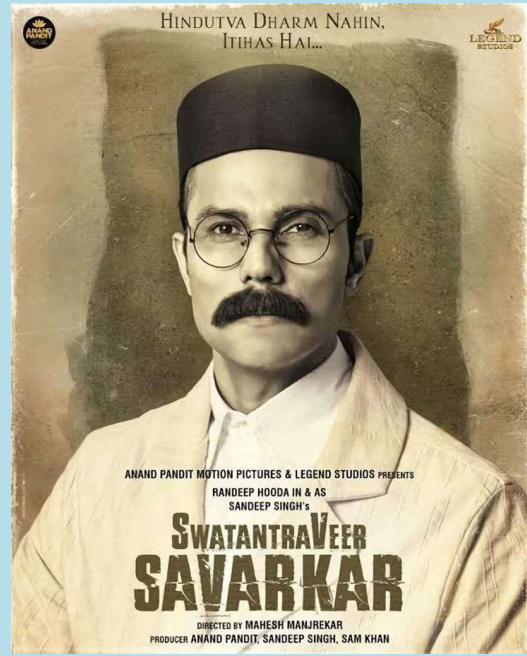
**BOOK OF THE EDITION**

**SAVARKAR** by Vaibhav Purandare



**MOVIE OF THE EDITION**

**SAVARKAR**



- AU TALK publishes news about seminars/workshops/conferences that have taken place at any Department or Centre of the University. A piece of news along with a **photograph of the organizers** should be emailed at [editorialboard.autalk@allduniv.ac.in](mailto:editorialboard.autalk@allduniv.ac.in)
- The magazine publishes informative articles also. Articles should aim to bring out important scientific, ethical, and environmental issues and must be lucid in their message to society. They can be written in Hindi or English. In one edition, the magazine can publish up to four such articles.
- **Do not send pictures capturing garlanding or shawl/memento-giving moments.**
- The magazine should be widely circulated among students and faculty and on all social media platforms so that the excellent work done under the auspices of the University of Allahabad reaches far and wide and benefits all.

**ALUMNI MEET**

